भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **जनवरी** 2002 | **अंक** 1

डॉ० बदरीनाथ कपूर

भाषा विज्ञान एवं कोशशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् **डॉ० बदरीनाथ कपूर** का सम्मान किया उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने। डॉ० कपूर को 'विद्या भूषण' का अलंकरण मिला है। इस पुरस्कार की राशि 50 हजार रुपया है। पंजाब में जन्मे डॉ० कपूर ने पाकिस्तान बनने की त्रासदी को बड़ी गहराई से झेला। 1947 में अकालगढ़, गुजराँवाला पंजाब के निवासी बदरीनाथ कपूर के मकान में दंगाई घुस गये, इनके पिता ने किसी तरह इन्हें भगा दिया। ये घर से निकल रहे थे तभी इन्होंने देखा इनके माता-पिता कत्ल कर दिये गये हैं। किसी तरह वाराणसी आये यहाँ अपने मामा प्रसिद्ध कोशकार बाबू रामचन्द्र वर्मा के यहाँ वाराणसी में रहने लगे। वर्माजी ने इन्हें कोश और व्याकरण के निर्माण में दीक्षित किया। आरम्भ से ही ये कोश के कार्य में लगे हैं। भाषाशास्त्र पर ही इन्होंने चंडीगढ़ विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की थी।

डॉ० कपूर के प्रमुख ग्रंथ हैं— १. वैज्ञानिक परिभाषा कोश, २. आजकल की हिन्दी, ३. हिन्दी अक्षरी, ४. अंग्रेजी हिन्दी पर्याय कोश, ५. शब्द परिवार कोश, ६. लोक भारती मुहावरा कोश, ७. परिष्कृत हिन्दी, ८. हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति, ९. लिपि, वर्तनी और भाषा, १०. हिन्दी प्रयोग कोश आदि।

पिछले वर्ष इनका 'अंग्रेजी हिन्दी कोश' छोटे-बड़े दो रूपों में छपा है। इस कोश की बड़ी प्रतिष्ठा हुई। कोश निर्माण के क्रम यह डॉ० कपूर का महत्त्वपूर्ण अवदान है। इसके पूर्व भी डॉ० कपूर को अहिंदीभाषी लेखक को मिलने वाला सौहार्द सम्मान मिल चुका है। उ०प्र० हिन्दी संस्थान ने डॉ० कपूर का सम्मान कर सम्मानों के क्रम में बधाई का कार्य किया है।

महामना की गरिमा की रक्षा करें

25 दिसम्बर को महामना पं० मदनमोहन मालवीय की जन्मतिथि पर समारोह सारे भारत में मनाया गया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जो मालवीयजी की कर्मभूमि है, के अध्यापकों ने भी मालवीयजी के सपनों को पूर्ण करने का संकल्प लिया। महामना जयन्ती पर कुलपति प्रो० वाई०सी० सिम्हाद्री ने मालवीय भवन में मालवीयजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। विश्वविद्यालय के कतिपय अध्यापकों ने भी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। दूसरी ओर मालवीयजी के सपनों को साकार करने और उनके आदर्शों का बखान करने वाले छात्रों की भाँति अध्यापकों ने अध्यापक संघ भवन में पन्द्रहवें दिन के अनशन की शुरुआत की। तीसरी ओर छात्र विकास परिषद के कार्यकर्ताओं ने भी मालवीयजी के सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया। विचारणीय है कि मालवीयजी के स्वप्न क्या थे और उनको पूरा करने लिए किस प्रकार संकल्प किये जा रहे हैं। शिक्षकों द्वारा धरना, अनशन और प्रदर्शन छात्रों की शैली में और छात्रों को कुलपति के विरुद्ध आन्दोलन के लिए प्रेरित करना, क्या यह मालवीयजी के आदर्शों का प्रथम चरण है? दूसरा चरण इससे कहीं अधिक भयानक होगा। जब वे ही छात्र अध्यापकों के समक्ष उन्हीं की शैली में व्यवहार करेंगे तब आदर्श के लिए त्याग और धैर्य की बात कही जायेगी। क्या पद और आर्थिक लाभ के लिए ही आन्दोलन करने से मालवीयजी के स्वप्न पूर्ण होंगे? विश्वविद्यालय प्रशासन के विरुद्ध असंतोष व्यक्त करने के रचनात्मक तरीके भी हैं—न्यायालय, प्रतीक प्रतिवेदन किन्तु सड़कों पर उतरकर सड़क की भीड़ को शामिल कर लेना कैसी बुद्धिमानी है?

मालवीयजी के विराट स्वप्न के इस केन्द्रीय विश्वविद्यालय के साथ केन्द्र भी कैसे खेल खेल रहा है। अनिश्चय और अनिर्णय इसकी नियति बन गई है। विजिटर के द्वारा निर्णय में विलम्ब ने इस विश्वविद्यालय को सड़क पर चर्चा का विषय बना दिया है। ऐसे वातावरण में निर्णय के प्रतिफल में जो कुलपति बनकर आयेगा उसकी क्या गति होगी, विश्वविद्यालय को वह कैसे चलायेगा, यह उसकी अग्नि परीक्षा होगी।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

पुरस्कार-सम्मान

साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिन्दी की युवा लेखिका **अलका सरावगी** और प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रकार एवं लेखक **राजमोहन गाँधी** सहित विभिन्न भाषाओं के 22 रचनकारों को वर्ष 2001 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। सुश्री सरावगी को यह पुरस्कार उनके हिन्दी उपन्यास **कलि कथा वाया बाई पास** के लिए जबकि श्री गाँधी को उनके अंग्रेजी जीवनवृत्त **राजाजी ए लाईफ** के लिए दिये जायेंगे। सभी 22 भाषाओं में पुरस्कृतों को चुनने के लिए तीन-तीन प्रसिद्ध विद्वानों की एक चयन समिति बनाई गई थी।

यह पुरस्कार 19 फरवरी, 2002 को एक समारोह में दिए जाएँगे। पुरस्कृत 22 रचनाकारों के नाम व कृतियाँ इस प्रकार हैं—असमिया : एधानी महीर-हान्ही महिम बरा, बांग्ला : पंचासटि गल्प-अतिन बंद्योपाध्याय, डोगरी : निधे रंग-विरेन्द्र केसर, अंग्रेजी : राजाजी ए लाइफ-राजमोहन गाँधी, गुजराती : आगंतुक-धीरुबेन पटेल, हिन्दी : कलिकथा वाया बाइपास-अलका सरावगी, कन्नड़ : इंग्लिश साहित्य चरित्रे : साहित्य का इतिहास-एल०एस० शेषगिरि राव, काश्मीरी : रेखे-स्व० मोहिउद्दीन गौहर, कोंकणी : यमन-माधव बोरकार, मैथिली : प्रतिज्ञा पांडव-स्व० बबुआजी झा, मलयालम : आट्टूर रविवर्मयुटे कवितकल-आट्टूर रवि वर्मा, मणिपुरी : खोड्जी मखोल-एन० सुनिता, मराठी : तणकट-राजन गवस, नेपाली : आहत अनुभूति-लक्खीदेवी सुन्दास, ओड़िया : तन्मय धूली-प्रतिभा सतपथी, पंजाबी : शब्दांत-देव, राजस्थानी : घराणो-अब्दुल वहीहद, संस्कृत : को वै रसः-पी०श्रीरामचन्द्रुडु, सिन्धी : भगत-प्रेम प्रकाश, तमिल : सुदंतिर दागम-स्व० सी०एस० चेल्लप्पा, तेलुगु : हम्पी नुंची हडप्पा दाका-स्व० तिरुमला रामचंद्र, उर्दू : ताऊस चमन की मैना-नय्यर मसूद।

'कलिकथा : वाया बाईपास' बीते दशक या शताब्दी के अन्तिम चौथाई की सबसे उल्लेखनीय कृतियों में एक है इतिहास और कथा के बीच, तीन पीढ़ियों की कहानी के बीच और तीन-चार तरह की कथा-भाषा के बीच लेखिका जिस सुगमता से कुलांचे भरती हुई कभी आगे जाती है, कभी पीछे आती है वह लगभग हैरान करने वाला अनुभव है। एकदम स्वच्छ मन वाले और दुनियादारी के मामले में 'बुड़बक' घोषित हो गए नायक-किशोर बाबू की तीन पीढ़ियों की कहानी के बहाने कलकत्ता में बसे मारवाड़ी समाज, कलकतिया समाज, आजादी की लड़ाई, स्वतंत्रता के पहले पचास वर्षों के अनुभवों और अच्छे-बुरे के बीच अच्छे के साथ चलती यह कहानी हमें जब इस पूरे सौ साल के मूल्यांकन के लिए विवश कर देती है तो कथा लेखिका की सफलता का परचम भी फहरने लगता है।

कथा और इतिहास के अद्भुत मेल और उपन्यास की भाषा के बँधे-बँधाए ढाँचे को तोड़ना, इन दोनों दृष्टियों से 'कलिकथा : वाया बाईपास' एकदम नएपन का एहसास देता है। जाहिर है इस उपन्यास को पुरस्कार मिलने की खबर से पुरस्कारों की राजनीति, बँधे बँधाए फार्मूले और साहित्यिक खेमेबंदियों के टूटने का आभास देते हैं। **— हिन्दुस्तान(सम्पादकीय)**

पुरस्कार कृति को मिलता है लेखक को नहीं। लेखन एक अनवरत यात्रा है, जिससे जीवन को एक नये दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। मेरे लिए लिखना महत्त्वपूर्ण है। लगातार लेखन को मैं पुरस्कारों से ज्यादा महत्त्व देती हूँ।

लेखक का काम लिखना होता है। मैं अपने उपन्यासों के माध्यम से जीवन को समझने की कोशिश करती हूँ।

इतिहास एक डाक्यूमेंट होता है। जबकि स्मृति तो इतिहास क्या, किसी खास व्यक्ति के पास से देखने का एक टूल है। इतिहास से किसी एक खास चरित्र को, जो हाशिये पर चला जा चुका होता है, स्मृति के सहारे ही उभारा जा सकता है। इसी स्मृति के सहारे वर्तमान को भी समझा जा सकता है। **— अलका सरावगी**

जानकीवल्लभ शास्त्री
भारत-भारती से सम्मानित

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 17 दिसम्बर को एक भव्य समारोह में लब्धप्रतिष्ठ हिन्दीसेवियों को वर्ष 2000 के अलंकरणों से विभूषित किया गया। गन्ना संस्थान सभागार, लखनऊ में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के राज्यपाल भाई महावीर थे।

समारोह की अध्यक्षता उ०प्र० विधान सभा के अध्यक्ष केसरीनाथ त्रिपाठी ने की, श्री त्रिपाठी हिन्दी संस्थान के पदेन अध्यक्ष भी हैं।

वर्ष 2000 के लिए हिन्दी संस्थान का **सर्वोच्च सम्मान भारत-भारती** वरिष्ठ हिन्दी सेवी **आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री** को प्रदान किया गया। अस्वस्थ होने की वजह से श्री शास्त्री स्वयं आज के इस सम्मान समारोह में शामिल नहीं हो सके, उनके स्थान पर उनके प्रतिनिधि वीरेन्द्र कुमार ने यह सम्मान ग्रहण किया, जिन्हें मध्य प्रदेश के राज्यपाल भाई महावीर ने संस्थान की ओर से **इस सम्मान के तहत वाग्देवी की प्रतिमा, ताम्रपत्र और 2 लाख 51 हजार रुपये की राशि का चेक भेंट किया।** दो लाख रुपये की राशि का **लोहिया साहित्य सम्मान** पौराणिक कृतियों के यशस्वी रचनाकार वाराणसी के **मनु शर्मा** को प्रदान किया गया। इसके अलावा इतनी ही राशि का **महात्मा गाँधी सम्मान** चर्चित कथाकार गिरिराज किशोर को, **हिन्दी गौरव सम्मान** वयोवृद्ध हिन्दीसेवी रामेश्वर दयाल दूबे को, **अवंतीबाई सम्मान** डॉ० बृजेन्द्र अवस्थी को और **पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान** डॉ० शरण बिहारी गोस्वामी को प्रदान किया गया।

पचास हजार रुपये की राशि के **साहित्य भूषण सम्मान** से कुल ग्यारह हिन्दी सेवी विभूषित किये गये, जिनमें डॉ० विश्वनाथ तिवारी, प्रेमशंकर मिश्र, डॉ० सुरेश गौतम, डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी, श्रीमती चित्रा मुद्गल, डॉ० शिवबहादुर सिंह भदौरिया, डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र, डॉ० सीतेश आलोक, स्वदेश भारती, सत्यनारायण द्विवेदी 'श्रीश' और डॉ० विष्णुदत्त 'राकेश' शामिल हैं।

विदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य करने वाले हिन्दीसेवी को दिया जाने वाला **प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान** डॉ० इन्दु प्रकाश पाण्डेय को प्रदान किया गया।

वर्ष 1999 और वर्ष 1998 के लिए इस पुरस्कार से सम्मानित घोषित हुए हिन्दी सेवी चूँकि इन वर्षों के अलंकरण समारोह में उपस्थित नहीं हो पाये थे, इसलिए वर्ष 1999 के लिए इस पुरस्कार से डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय और वर्ष 1998 के लिए डॉ० विवेकानंद शर्मा को भी आज सम्मानित किया गया। आज के इस समारोह में **हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान** डॉ० महेन्द्र किशोर वर्मा और सुश्री तितिक्षा शाह को प्रदान किया गया। जबकि पचास हजार रुपये की ही राशि का **विद्याभूषण सम्मान** डॉ० बदरीनाथ कपूर, **पत्रकारिता भूषण सम्मान** डॉ० भगवानदास अरोड़ा, **लोक भूषण सम्मान** राम गोपाल शर्मा 'दिनेश', **विज्ञान भूषण सम्मान** डॉ० देवेन्द्र शर्मा, **कला भूषण सम्मान** डॉ० रमेश गौतम को प्रदान किया गया। **बाल साहित्य भारती सम्मान** से डॉ० रोहिताश्व अस्थाना सम्मानित किये गये।

अन्य भारतीय भारतीय भाषाओं के विद्वानों द्वारा हिन्दी में उल्लेखनीय लेखन के लिए दिये जाने वाले **सौहार्द सम्मान** से कुल नौ अन्य भाषाभाषी हिन्दी सेवी सम्मानित किये गये। ये हैं पंजाबी भाषी डॉ० जा० आशीर्वादम, सिन्धी भाषी डॉ० दयाल कोटूमल धामेजा 'आशा', उर्दू भाषा के डॉ० दीन मोहम्मद 'दीन', तेलुगुभाषी डॉ० एम० वेंकटेश्वर, गुजरात के डॉ० बलवंत शांतिलाल जानी, ओड़िया भाषी सुश्री मंजू शर्मा महापात्र, कश्मीरी भाषी युवा साहित्यकार व पत्रकार महाराज कृष्ण भरत, उर्दू की कुमार निखत बेगम। इनमें से डॉ० जा० आशीर्वादम और डॉ० बलवंत शांतिलाल जानी अनुपस्थित रहे।

वर्ष 1998 में प्रकाशित पुस्तकों पर दिये जाने वाले **नामित पुरस्कारों** से डॉ० गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ० आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप', गयाप्रसाद

तिवारी 'मानस', अशोक द्विवेदी, डॉ० शेर सिंह बिष्ट, रघुवर दयाल श्रीवास्तव, धर्मपाल 'अकेला', डॉ० गिरिराज शाह, सद्युम्न आचार्य, डॉ० राम प्यारे मिश्र, डॉ० रमाकांत, डॉ० सन्तु कुमार, डॉ० अजब सिंह, डॉ० शिव प्रसाद डबराल 'चारण', नीलम श्रीवास्तव, प्रभु झिंगरन, वीरेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ० नीरजा माधव, से०रा० यात्री, डॉ० दिनेश मणि, डॉ० शशि तिवारी, सुश्री अलका पाठक और डॉ० नरसिंह श्रीवास्तव सम्मानित किये गये।

नीरज को
प्रथम माणिक वर्मा पुरस्कार

पद्मश्री गोपालदास नीरज को प्रथम माणिक वर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कस्तूरी संस्थान हरदा माणिक वर्मा सांस्कृतिक एवं परमर्थिक न्यास के सौजन्य से 24 दिसम्बर को राजधानी में आयोजित एक समारोह में श्री नीरज को यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। उन्हें पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपये नकद, स्मृति चिन्ह और सम्मान पत्र भेंट किये गये।

रमणिका फाउंडेशन

रमणिका गुप्ता फाउंडेशन, ए-221, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-24 इस वर्ष 'दलित विमर्श', 'स्त्री विमर्श', 'साम्प्रदायिक सद्भाव एवं जनवादी विमर्श' पत्रकारिता/सम्पादन पर क्रमश: **बिरसा मुण्डा, सावित्रीबाई फुले** तथा **सफदर हाशमी** सम्मान प्रदान करेगा।

भारतीय प्रतिमालक्षण
को
आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार

मध्यकालीन प्रतिमालक्षण पुस्तक पर राज्यपाल श्रीविष्णुकान्त शास्त्रीजी ने 8 नवम्बर 2001 को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के इतिहास विधा के अन्तर्गत वर्ष 1997 के **आचार्य नरेन्द्रदेव नामित पुरस्कार** से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला इतिहास विभाग के **डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी** तथा **डॉ० कमल गिरि** को उनकी पुस्तक **भारतीय प्रतिमालक्षण** के लिए पुरस्कृत किया है। यह उल्लेखनीय है कि इसी पुस्तक पर लेखकद्वय को इन्दिरागाँधी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इससे पूर्व इन्हीं लेखकद्वय की पुस्तक **मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला** भी आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार से पुरस्कृत हो चुकी है। **दोनों ही पुस्तकें विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हैं।**

इतिहासकार अधिवेशन

भारतीय इतिहास कांग्रेस के भोपाल में आयोजित तीन दिवसीय 62वें अधिवेशन के दौरान हिन्दी की उपेक्षा को लेकर कतिपय इतिहासकारों ने अधिवेशन परिसर में आमरण अनशन शुरू कर दिया। अंग्रेजी के प्रभुत्व को बनाये रखने वाले वामपंथी इतिहासकार पूरे अधिवेशन में छाये रहे।

महाभारत के कथानक पर आधारित डॉ० युगेश्वर का नवीनतम उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य

लोगों को आश्चर्य होता है। महाभारत में नीतिशास्त्र के सबसे महत्त्वपूर्ण वक्ता विदुर हैं। कौरव कुल के महामात्य विदुर शूद्र शरीर में धर्म के अवतार हैं। कौरवों के महामात्य होकर भी वे महाभारत युद्ध से अलग हैं। हर क्षण सत्य बोलते हैं, सत्य करते हैं। युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र एवं श्रीकृष्ण समान भाव से उन पर विश्वास करते हैं। न चाह कर भी दुर्योधन उन्हें बर्दाश्त करता है। उन्होंने लाक्षागृह में जलने से पाण्डवों की रक्षा की थी। द्यूत की निंदा की थी। दुर्योधन को बार-बार डाँटा था। धृतराष्ट्र को उत्तम सलाह दी थी—वे दुर्योधन का त्याग करें, यह कुल नाशक है।

उनमें शूद्र होने की हीनता का नितांत अभाव है। सभा में दु:शासन द्रौपदी को नंगा कर रहा था। उस समय भीष्म जैसे महारथी, महात्मा भी मौन हैं। वे मन से पाण्डवों के साथ हैं। किन्तु तन कौरवों को दे दिया है। कौरवों के लिये ही मरते, मारते हैं। विदुर में ऐसा कोई द्वैध नहीं है। उनका पक्ष सीधा और स्पष्ट है। रिश्ते में वे पाण्डव एवं कौरव दोनों के चाचा हैं। किन्तु पाण्डवों के मौसा भी हैं। विदुर पत्नी पाण्डव माता कुंती की बहन है। पाण्डव को 13 वर्षों का वनवास भोगना है। पाण्डव द्रौपदी के साथ वन गए। पाण्डव माता कुंती विदुर के घर रहीं। उस घर में रहते कुंती ने कृष्ण से कहा—''भतीजे कृष्ण, युधिष्ठिर से कहना क्षत्राणियाँ युद्ध के लिये, अन्याय से लड़ने एवं प्रजा रक्षा के लिये ही पुत्र उत्पन्न करती हैं। वह समय आ गया है, जब पाण्डवों को कौरवों से युद्ध करना चाहिए।'' कुंती की यह अपील अत्यंत मार्मिक थी, मानो स्वयं विदुर बोल रहे हैं।

कौरवों और पाण्डवों में समझौता कराने श्रीकृष्ण हस्तिनापुर आये थे। दुर्योधन ने कृष्ण की बात नहीं मानी। उलटे श्रीकृष्ण को कैद करना चाहा। विदुर ने इसे दुर्योधन की मूर्खता की संज्ञा दी। कृष्ण ने दुर्योधन के भव्य भोजन और निवास को अस्वीकार कर दिया। वे विदुर की कुटिया में ठहरे। उन्हीं के द्वारा प्रस्तुत सागपात का सामान्य भोजन किया। इससे विदुर के रहन-सहन का भी पता लगता है। महामात्य होकर भी विदुर ने श्रीकृष्ण को अपने यहाँ ठहराने में संकोच नहीं किया। इससे उनकी सत्य-निष्ठा और अभय का ज्ञान होता है। उन्होंने कृष्ण के लिये कोई विशेष व्यवस्था नहीं की। जैसे रहते थे वैसा रखा। जो खाते थे वह खिलाया। विदुर ने कभी भी महामात्य पद का दुरुपयोग नहीं किया। पाण्डवों को बचाया अवश्य। किन्तु कौरवों के नाश का कोई उपक्रम नहीं किया। भयानक द्वंद्वों, युद्धों एवं स्वार्थों के बीच महामात्य का पद सँभालते हुए भी विदुर द्वंद्व रहित हैं।

विदुर ने कभी, किसी भी स्तर पर शस्त्र नहीं ग्रहण किया। उनका सम्पूर्ण व्यक्ति अहिंसक सत्याग्रही का है। वे राजभवन, राजकुल में रहकर उसकी उन्नति चाहते हुए भी सबसे भिन्न हैं। न अनुचित लाभ लेते हैं, न देते हैं। साधारण रहन-सहन में ही सुख मानते हैं। इस महान् अहिंसक योद्धा, शूद्र महामात्य एवं सत्याग्रही की ओर ध्यान जाना आवश्यक है। विदुर की कथा भारतीय राजनीति और सामाजिक जीवन को दिशा देती है।

150.00

पाश्चात्य देशों के लोग हमें सेकुलरिज्म का अर्थ बताते हैं जो स्वयं अन्य धर्मों का आदर नहीं करते। वस्तुत: धर्मनिरपेक्ष कुछ भी नहीं है। पिता, पुत्र, अध्यापक, छात्र, पति-पत्नी सभी का कोई न कोई धर्म होता है। यह अलग बात है कि हम सभी के धर्मों का आदर करते हुए अपने धर्म के प्रति निष्ठा व्यक्त करें। जिस प्रकार नदी किसी भी दिशा से बहे समुद्र की ओर ही जाती है। उसी प्रकार व्यक्ति किसी भी रास्ते पर चले, उसका इष्ट कोई भी हो। यदि उसके प्रति व्यक्ति श्रद्धा, आस्था और निष्ठा रखता है तो एक ही स्थान पर पहुँचेगा। इस प्रकार व्यक्ति अपने इष्ट में सम्पूर्ण सृष्टि को देखता है। इससे संकीर्णता समाप्त होती है। सर्वधर्म समभाव भारतीयता की पहचान है। जिस दिन यह लुप्त हो जायेगा उसी दिन भारतीयता संकट में पड़ जायगा।

—विष्णुकान्त शास्त्री
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

पत्र-पत्रिकाएँ

मड़ई (वार्षिक) 2001
सम्पादक-प्रकाशक : डॉ० कालीचरण यादव
सम्पर्क : बनियापारा, जून बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
लोक संस्कृति, लोक साहित्य, लोककला, लोकजीवन पर विशिष्ट सामग्री से परिपूर्ण ज्ञानवर्धक संग्रहणीय विशेषांक, 232 पृष्ठों में सुन्दर कलात्मक मुद्रण। डॉ० यादव को असीम बधाई।

सुधारक (द्वैमासिक)
सम्पादक : दिवाकर
सम्पर्क : मोहिनी भवन, धरमपैठ, नागपुर
(वार्षिक 40.00)

समकालीन जनमत (त्रैमासिक)
सम्पादक : रामजी राय
सम्पर्क : मदनधारी भवन, एस०पी० वर्मा रोड
पटना-1 (वार्षिक 120.00)

योग मंजरी (त्रैमासिक)
भारतीय योग संस्थान
सम्पर्क : ए०डी० 24, शालीमार बाग, दिल्ली-88
(वार्षिक 40.00)

युद्धरत आम आदमी (त्रैमासिक)
सम्पादक : रमणिका गुप्त
सम्पर्क : ए 221, डिफेंस कालोनी
नयी दिल्ली-24 (वार्षिक 80.00)

अक्षर पर्व (वार्षिकी)
सम्पादक : आलोकप्रकाश पुतुल
सम्पर्क : देशबंधु परिसर, रायपुर-492200
(25.00)

हम इन्हें भूलते जा रहे हैं

डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल की जयन्ती

हिन्दी समाज दिनों दिन स्मृति लोप का शिकार होता जा रहा है। अपने उन पुरखों को याद करने में भी हम स्मृति दारिद्र्य का परिचय दे रहे हैं जिनका योगदान हमारी भाषा व साहित्य के लिए बेहद जरुरी है। ऐसे ही स्मृति योग्य मनीषी रहे हैं पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल जिनकी जन्मशती चुपचाप बीत गयी और हिन्दी जगत ने जिन्हें याद भी नहीं किया।

2 दिसम्बर 1901 को गढ़वाल के पाली गाँव में डॉक्टर बड़थ्वाल का जन्म हुआ। गढ़वाल, लखनऊ और कानपुर में शिक्षा प्राप्त कर चुके बड़थ्वाल 1926 ईस्वी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक हुए। 1928 में हिन्दी एम०ए० के प्रथम बैच में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। सन् '30 में बड़थ्वाल जी यहीं के हिन्दी विभाग में नियुक्त हुए। बाद में उन्होंने 'ट्रेडिशन्स ऑफ इण्डियन मिस्टिसिज्म बेस्ड अपॉन दि निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोएट्री' विषय पर पहला मौलिक शोध प्रबन्ध तैयार किया। यह सन् '36 में प्रकाशित हुआ और डॉक्टर बड़थ्वाल बेहद चर्चित हो गए। 1933 में इस पर डी०लिट्० की उपाधि मिली। बाद में यह शोध प्रबन्ध 'हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय' शीर्षक से अनूदित भी हुआ। इस ग्रन्थ को आज भी संदर्भ के लिए सर्वाधिक उद्धृत किया जाता है। हिन्दी सेवी के रूप में डॉक्टर बड़थ्वाल ने कई भूमिकाएँ निभायीं। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने 'मनोरंजनी' नामक एक हस्तलिखित पत्रिका भी निकाली। कानपुर प्रवास के दौरान उन्होंने 'हिलमैन' का प्रकाशन भी किया। उन्होंने 70 से अधिक निबन्ध लिखे जो साहित्य के तत्कालीन प्रश्नों के निराकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रस्थान थे और आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने अनेक सम्पादित ग्रन्थों की शोध परक भूमिकाएँ लिखीं। गोरखवाणी, रामानंद की हिन्दी रचनाएँ आदि पुस्तकों की भूमिकाओं ने उन रचनाओं के महत्त्व को प्रमाणित किया। उनके निबन्धों को बाद में सम्पूर्णानन्द, भगीरथ मिश्र और गोविन्द चातक जैसे विद्वानों ने सम्पादित किया।

कुछ कारणों से डॉक्टर बड़थ्वाल ने बी०एच०यू० छोड़कर सन् '38 में लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्यापक के रूप में कार्य शुरू कर दिया। हालाँकि अपने काशी प्रवास के दौरान बड़थ्वाल ने सन् '30 में अवैतनिक रूप से नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़कर कुछ गम्भीर कार्य भी किए थे। उन्हें आयु बहुत कम मिली थी, मगर उनकी सक्रियता सदा बनी रही। उन्होंने मूलगामी चिंतक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह किया। आज हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श का जोर है। डॉक्टर बड़थ्वाल ने अपने एक निबन्ध में काफी पहले लिखा था—''शूद्रों को हरिजन कहना उनके हृदय से आत्मसम्मान की जड़ काटने जैसा है।'' इस तरह की चिंताओं से उनके सरोकार बेहद पुराने हैं। वे एक बेहतर अध्यापक के रूप में हिन्दी विभाग बी०एच०यू० में प्रतिष्ठित थे। उनके प्रिय शिष्यों में शिवमंगल सिंह 'सुमन' भी हैं। सुमन जी कहा करते हैं कि बड़थ्वाल जी के प्रशंसकों में रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे लोग भी रहे। डॉक्टर रामविलास शर्मा कहा करते थे कि बड़थ्वाल जी की शोध-दृष्टि भविष्य के चिंतकों के लिए लगातार जरूरत बनती रही क्योंकि उनका कार्य समाज-सापेक्ष था। निर्गुण सम्प्रदाय को उजागर करने वाले इस विद्वान् ने 24 जुलाई 1944 को इहलीला समाप्त की। आज के दौर में उन्हें याद करना ज्यादा जरूरी है, मगर भुलाए रखने की प्रथाओं के हम शिकार हैं। **—प्रदीप तिवारी**

साहित्य का तीसरा पक्ष

भारत में कम्युनिस्टों का मुख्य गढ़ बंगाल और केरल है। किन्तु वहाँ के साहित्य पर उनका कोई अधिकार नहीं है। यह अधिकार मुख्यत: हिन्दी प्रदेश पर है। स्थिति यह है कि गैर कम्युनिस्ट होना असाहित्यिक होने जैसा है। अपनी साहित्यिक शक्ति नहीं, संगठन शक्ति के बल कम्युनिस्टों ने साहित्य की ऊर्जा को अपनी मुट्ठी में कर लिया है। बिना पढ़े-लिखे भी वे साहित्य के नेता हैं। विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग, पत्र-पत्रिकाएँ, सरकारी, गैर सरकारी पुरस्कारों, पदों को कम्युनिस्ट साहित्यकारों ने अपना साम्राज्य बना रखा है। जिसे चाहे दें, न दें। प्रत्येक शहर में, कार्यालयों में उनके सिपाही हैं। उनके आतंक हैं। इस आतंक के मारे लोगों को बलात् जय-जयकार करना होता है।

साहित्य में कम्युनिस्ट नेता की इस महती शक्ति के बावजूद किसी कम्युनिस्ट साहित्यकार का राजनीतिक सम्मान नहीं है। साहित्य के मसीहा के लिये शासन में हिस्सेदारी का पूर्णत: अभाव है। कुछ दिनों पूर्व एक कम्युनिस्ट साहित्यकार का जन्मदिन राजधानी में मनाया गया। वहाँ कोई कम्युनिस्ट नेता नहीं था। हाँ, जाति के कई नेता थे, जो कभी कम्युनिस्ट नहीं हैं। यह साम्यवाद और जातिवाद का मेल है। जैसे स्वतंत्रता आन्दोलन के समय साम्यवाद और लीग का मेल था। जब एक जाति, एक संगठन किसी को नेता मान लेता है तो दूसरे भी उसे मानने लगते हैं।

कम्युनिस्टों के साहित्य साम्राज्य में एक बड़ा हिस्सा अफसरों और पत्रकारों का भी है। वे भी स्वयं को अपने भाइयों, बहनों, पत्नियों, पिताओं आदि को सरकारी पद, प्रतिष्ठा पुरस्कार दिला देते हैं। इन सब स्थितियों से साहित्य में भयानक गिरावट आई है। अब साहित्य साधना नहीं, साधन, संगठन और सत्ता शक्ति मात्र रह गया है।

इधर एक नया वर्ग साहित्य में प्रवेश कर रहा है। वह अपने को दलित साहित्यकार घोषित करता है। कम्युनिस्टों का आधार वर्गवाद जैसा था। कहने में तो था ही, दलित जातिवाद वाला है।

जैसे कम्युनिस्टों का लिखा या उनसे प्रशंसित साहित्य की ही प्रतिष्ठा थी। वैसे ही दलित द्वारा लिखा साहित्य ही प्रतिष्ठा पाएगा। सम्भव है किसी दिन दलित गैर साहित्य को प्रतिबंधित कर दे। कम्युनिस्टों ने उपेक्षा की थी। कुछ को अपने अनुकूल घोषित कर सम्मानित भी किया था। यद्यपि सम्मान से असम्मान कर्म अधिक हुआ। जातिवाद का पौधा भी कम्युनिस्टों ने ही लगाया था। पहले अज्ञेय शत्रु नम्बर एक थे। अब रामविलास शर्मा को शत्रु माना जाने लगा है।

दलित सीधी बात करता है। जो दलित का लिखा नहीं है वह नहीं है। इसमें किसी प्रकार का समझौता नहीं।

पत्र-पत्रिकाओं की बन्दी। विश्वविद्यालयों की शिक्षा का गिरता स्तर। टी०वी० का प्रभाव नये साहित्यकारों के आगे आने में संकट हैं। विश्वविद्यालय, कालेजों आदि की नियुक्तियाँ अधिक वैज्ञानिक बनायी जा रही हैं। उनमें आरक्षण भी है। अत: दलित साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है। मारा जायगा ललित और बौद्धिक साहित्य। वर्ग चेतना और जाति चेतना। दोनों ही साहित्य-चेतना नहीं हो सकती हैं। दलित राजनीति जातियों में बँट रही है। दलित साहित्य भी जाति में बँटेगा। पहले कबीर दलित माने जाते थे अब रैदास दलित हैं। कम्युनिस्ट दलितों पर लिख कर छाती फुलाते थे। अब दलित स्वयं मैदान में हैं। उन्हें कम्युनिस्टों की फूली छाती पसन्द नहीं है। कम्युनिस्ट साहित्य में दूसरा पक्ष था, दलित तीसरा पक्ष है।

—युगेश्वर

कथाकार इसराइल नहीं रहे

हिन्दी के प्रमुख कथाकार **इसराइल** का 26 दिसम्बर को कोलकाता के एक अस्पताल में निधन हो गया। वह 66 वर्ष के थे और पीलिया से पीड़ित थे। दो चर्चित कहानी संकलन 'फर्क' और 'रोजनामचा' के लेखक इसराइल का जन्म नवम्बर 1935 में बिहार के गोपालगंज जिले के तत्कालीन छपरा मुहम्मदपुर गाँव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था।

कथ्य-अकथ्य

भूमण्डलीकरण के चलते हिन्दू, मुस्लिम संस्कृति खत्म नहीं होगी देश की प्रकृति के अनुरूप यहाँ संस्कृति का एक गुलदस्ता होगा।

भूमण्डलीकरण से अब एक नयी विश्व संस्कृति, विश्व साहित्य और विश्व समाज बन रहा है।

भूमण्डलीयकरण अब ब्रह्म और ब्रह्माण्ड से भी ऊपर की चीज हो गया है। भूगोल विभाग का ग्लोब अब ग्लोबलाइजेशन के बाद कामर्स, इकोनामिक्स समेत कई विभागों में अपनी घुसपैठ कर चुका है।

जब पूरी दुनिया के पास सत्ता का कोई केन्द्र नहीं होगा, कोई साम्राज्य नहीं होगा तो विश्व संस्कृति के उपवन में ऐसे फूल खिलेंगे, ऐसा गुलदस्ता बनेगा जिसमें कई रंग, कई तरह की सभ्यता, संस्कृति, खुशबू और एक खुला आसमान नजर आयेगा तब विरोध का सिर्फ एक तरीका होगा असहयोग और यही असहयोग महात्मा गाँधी का सबसे बड़ा अस्त्र रहा है।

वह समय भी जल्द आयेगा जब एक बार महात्मा गाँधी के सिद्धान्त प्रासंगिक होंगे क्योंकि पूँजीवाद से अस्त्र-शस्त्रों के बल पर लड़ाई लड़ना बहुत कठिन है। यहाँ सिर्फ असहयोग की नीति अपनाकर ही जीत हो सकती है।

मैं साहित्य से संचालित होता हूँ। आज मैं पुराने साहित्यकारों और आज के कृतिकारों की धूल साफ कर रहा हूँ।

आलोचक का धर्म-कर्म निमित्त होने में है। किसी भी आलोचक के लिए उसकी आलोचना महत्त्वपूर्ण होती है। रचनाकार और आलोचक दोनों एक ही पथ के सहचर हैं। **—नामवर सिंह**

★ ★ ★

नामवर अद्‌भुत प्रतिभा से अपनी बात को चमत्कारिक शैली में व्यक्त करना जानते हैं। उन्हें हिन्दी साहित्य के इतिहास की रचना करनी चाहिए।

—विष्णुकान्त शास्त्री, *राज्यपाल,* उत्तर प्रदेश

★ ★ ★

हिन्दी के पास यदि नामवर जी नहीं होते तो हिन्दी भाषा में शून्य की स्थिति पैदा होती। उनकी उपस्थिति विचार और विवाद के साथ है। वे सर्वश्रेष्ठ आलोचक हैं। हिन्दी भाषा विवेक, विनम्रता और सौजन्यता के साथ विद्रोह की भाषा है। नामवर जी ने विद्रोह व विवेक को अपनी जड़ता से बाहर निकाला है। **—डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय**

★ ★ ★

अब (साहित्य) पढ़नेवालों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। भाषाई राजनीति के कारण उर्दू के पाठकों की संख्या लगातार गिर रही है।

साहित्य पढ़ने से कल्पनाओं को विस्तार मिलता है और सोचने समझने की क्षमता बढ़ती है। साहित्य जब दृश्य प्रचार माध्यमों पर आता है तो सारा ध्यान छवि पर केन्द्रित हो जाता है और सोचने-समझने का कोई मौका नहीं मिलता।

बच्चों को केन्द्रित कर बहुत कम लिखा गया है और जो लिखा गया उसे सम्भाला, सहेजा ही नहीं गया।

प्रत्येक दौर में मार काट रही है, लूटपाट रही है और उथल-पुथल रही है। लेकिन श्रेष्ठ और समाजोपयोगी साहित्य लिखा गया है। सूफी और भक्ति आन्दोलन के दौरान लिखा गया साहित्य प्रत्येक आदमी को पढ़ना चाहिए। **—कुर्रतुलएन हैदर**

★ ★ ★

अधिक से अधिक पाठकों को आकर्षित करने के लिए देश की मातृभाषा हिन्दी में सुरुचि बढ़ाने की आवश्यकता है। हिन्दी साहित्य और पुस्तकों से आम लोगों की दिलचस्पी घट रही है। बाहरी लोगों से हिन्दी की मौजूदा स्थिति में सुधार की उम्मीद नहीं कर सकते।

हिन्दी के प्रति सुरुचि बढ़ाने के लिए कुछ किया जाना चाहिए। यह भाषा मौजूदा समय में अनाथ हो गयी है जबकि इस भाषा को अधिक आत्मसम्मान की आवश्यकता है। **—जसवंत सिंह**

★ ★ ★

संरक्षण के अभाव में हिन्दी की पुस्तकों को नुकसान उठाना पड़ रहा है। देश में हिन्दी बोलने वाले लोगों की विशाल आबादी है लेकिन इसके बावजूद हिन्दी कहीं नहीं है। **—निर्मल वर्मा**

आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की 92वीं जयन्ती

हिन्दी देश का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए हिन्दी दिवस को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। चूँकि भारत माता अट्ठारह भाषाओं में बोलती हैं। इसलिए भारत में बोली जाने वाली किसी भी एक भाषा को हिन्दी के साथ सीखकर भारत की उन्नति में रचनात्मक योगदान करना होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के संस्थापक आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की साहित्य सेवा अति विशिष्ट थी तथा वे मनीषी आचार्य तो थे ही, साथ ही भक्त भी थे। राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह को स्मरण करते हुए उनकी 92वीं जयन्ती पर आयोजित समारोह में वयोवृद्ध मनीषी डॉक्टर फतेह सिंह को कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह 'साहित्य शिरोमणि सम्मान' से विभूषित किया गया तथा सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह ताम्रपत्र तथा रु० 50,000/- नकद भेंट किये। दक्षिण भारत की विदुषी साहित्यकार स्वर्गीया तुलसी जयरामन की स्मृति में स्थापित तुलसी जयरामन बाल साहित्य शिरोमणि सम्मान चेन्नई से पधारे वयोवृद्ध बाल साहित्यकार डॉ० बाल शौरि रेड्डी को रु० 10,000 नकद, स्मृति चिन्ह तथा ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया गया।

पाक भारत के साथ शैक्षिक प्रतिबन्ध

पाकिस्तान ने भारत की शैक्षिक, व्यावसायिक व शोध संस्थाओं के साथ किसी भी तरह के सहयोग या सहायता पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबन्ध लगा दिया है और अपनी सभी सम्बद्ध संस्थाओं को उनसे सम्बन्ध तोड़ लेने का आदेश दिया है।

स्मृति-शेष

दो प्रज्ञा पुरुष का लोकान्तरण

दो दिन के अन्तराल में अपने-अपने क्षेत्र के दो आचार्यों के निधन से प्रबुद्ध वर्ग शोकाकुल हो गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष तथा मेरठ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **डॉ० रामलोचन सिंह** का 20 दिसम्बर को 84 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। दो दिन बाद 22 दिसम्बर को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व लब्धकीर्त्ति अध्यक्ष **डॉ० हीरालाल सिंह** का 87 वर्ष की आयु में शरीरान्त हो गया। दोनों ही व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्र के अग्रिम पंक्ति के विद्वान थे। रामलोचन सिंह का जन्म जौनपुर जनपद के डोभी विकास क्षेत्र के बहिरी गाँव में हुआ था। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर महामना मालवीयजी ने सन् 1946 में उन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में नियुक्त किया। किसी विशेष अध्ययन के लिए वे लन्दन गये और लन्दन स्कूल ऑफ इकनामिक्स से पी-एच० डी० उपाधि पायी। वहीं उस समय के भूगोल शास्त्र के विश्वविख्यात विद्वान उडले स्टैम्प से उनकी भेंट हुई और उनके मार्गदर्शन में प्रो० सिंह ने भूगोल के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति हुए। उनका निधन भूगोल की दुनिया की भारी क्षति है।

प्रख्यात इतिहासकार तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सामाजिक विज्ञान संकाय के पूर्व प्रमुख प्रो० हीरालाल सिंह का 22 दिसम्बर को वाराणसी में देहान्त हो गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एम०ए० की परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त प्रो० सिंह ने लन्दन से पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की थी। इतिहासकारों में उनका सम्मानजनक स्थान था। कुछ वर्षों तक गोरखपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष थे। उनका जन्म गाजीपुर जनपद के खानपुर गाँव में सन् 1915 में हुआ था। प्रो० रामलोचन सिंह और प्रो० हीरालाल सिंह दोनों ही अपने-अपने समय में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रमुख प्राध्यापकों में प्रतिष्ठित थे।

ब्रह्मदेव मधुर का निधन

वाराणसी के प्रतिष्ठित चित्रकार और कवि **ब्रह्मदेव मधुर** का 4 दिसम्बर को निधन हो गया। वे 67 वर्ष के थे। मधुर वाणी के बहुचर्चित कवि मधुर लोक व्यवहार में निपुण थे। चित्रकारिता में प्राचीन और आधुनिक दृष्टियों के वे सशक्तवादी कलाकार थे।

श्यामनारायण कपूर

कानपुर के 'साहित्य निकेतन' प्रकाशन के संचालक, साहित्यकार और विज्ञान-विषयक कई ग्रंथों के लेखक **श्यामनारायण कपूर** का 18 नवम्बर को 94 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उ०प्र० हिन्दी संस्थान तथा प्रयाग के हिन्दी साहित्य सम्मेलन से अलंकृत कपूरजी हिन्दी में विज्ञान विषयक बीस पुस्तकों के लेखक रहे हैं।

हास-हास-इतिहास

आज के विवाद की जड़ उस मार्क्सवादी मानसिकता में है जो विद्यार्थियों में, इतिहास-लेखन के माध्यम से, भारत की संस्कृति, सभ्यता, धर्म एवं मूल्यों आदि के प्रति घोर अनास्था पैदा करती है। इसका उद्देश्य उनमें देश-प्रेम, सर्वधर्म समभाव, मैत्री, करुणा जैसे गुणों का समावेश करना नहीं है। उन्हें गाँधी-भक्त नहीं लेनिन-भक्त बनाने का प्रयत्न है तभी तो जहाँ लेनिन की पूरे पृष्ठ की फोटो छापी जाती है वहीं बेचारे गाँधी एक छोटे से रेखाचित्र में सिमट कर रह गए हैं। **—डॉ० स्वराज्य प्रकाश गुप्त**

❑❑❑

हर इतिहास तथ्यों से नहीं बल्कि इतिहासकार के पूर्वाग्रह से बनता है, अत: असली विवाद यह है कि पूर्व में प्रतिष्ठित इन इतिहासकारों के तथा वर्तमान सरकार के पूर्वाग्रहों में से कौन सा अपनाया जाए। जाहिर है कि सरकार का पूर्वाग्रह आज की जन चेतना के अनुकूल है अत: उसे ही अपनाया जाना चाहिए। वास्तव में इतिहास का आज के वातावरण के अनुकूल पुनर्लेखन करके जनता के समक्ष प्रस्तुत कर सके।

हर इतिहास पूर्वाग्रह से ग्रसित होता है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। वर्तमान पाठ्य-पुस्तकें आज से 40 वर्ष पूर्व लिखी गई थीं। उस समय नेहरू के समाजवाद का बोलबाला था। उस समय उन इतिहासकारों को चुना गया जो इस चिंतन का अनुमोदन करते थे तथा उन्होंने अपने पूर्वाग्रह के अनुसार उन तथ्यों को चुना जिनसे उनके द्वारा वांछित निष्कर्ष निकाले जा सकते थे। अब समय बदल गया है। भारतीयकरण का विचार प्रबल हो रहा है। अत: वर्तमान राजनीतिज्ञ चाहते हैं कि आज की प्रमुख विचारधारा के अनुकूल ऐतिहासिक तथ्यों का चयन किया जाए। इस प्रकार यह विवाद पूर्व के पेशेवर इतिहासकारों बनाम आज के राजनीतिज्ञों का बन जाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि राजनीतिज्ञ इतिहास के क्षेत्र में दखल कर रहे हैं। यह सही भी है, परन्तु वास्तविक विवाद पूर्व के राजनीतिज्ञों ने अपने पूर्वाग्रह के अनुकूल इतिहासकारों को चुना था। जो इतिहासकार अपने पेशेवर उत्कृष्टता की दुहाई दे रहे हैं वे वास्तव में पूर्व के राजनीतिज्ञों के नमुाइन्दे मात्र हैं। यह विवाद मात्र बदलते राजनीतिक वातावरण का द्योतक है। सरकार को खुल कर कहना चाहिए कि हर साल इतिहास की एक प्रमुख विचारधारा होती है। यह विचारधारा बदल रही है, अत: इतिहास को बदलना आवश्यक ही नहीं बल्कि नैतिक जिम्मेदारी है। नए इतिहासकारों को उन तथ्यों को खोजना होगा जो कि वर्तमान विचारधारा से मेल खाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि एक इतिहास समीक्षा आयोग का गठन किया जाए जो इस कार्य को सम्पन्न करे। पूर्व में प्रभावी विद्वान इतिहासकारों को समझना चाहिए कि उनका समय ढल गया है। **—भरत झुनझुनवाला**

❑❑❑

बच्चों में किसी भी धर्म के बरे में गलत संस्कार डालने वाली पाठ्य पुस्तकें स्कूलों से हटाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि पुस्तकों में ऐसे पाठ्यक्रम भी नहीं होने चाहिए, जिनमें महापुरुषों के लिए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया गया हो।

—डॉ० मुरलीमनोहर जोशी

❑❑❑

छवि ध्वंस और छवि निर्माण पर पलने वाली आज की भारतीय राजनीति में इसे किसी अभियान की सफलता ही कहा जायगा। ऐसे अभियान को सफल बनाने के लिए कुछ शिक्षकों, पत्रकारों और राजनीतिज्ञों के बीच गहरा तालमेल आवश्यक होता है। तालमेल के बिना ऐसा कैसे हो सकता है कि जो सर्कुलर सी०बी०एस०ई० के कार्यालय से 23 अक्टूबर को हजारों विद्यालयों को भेजा गया हो वह एक महीने के बाद एक साथ कई अखबारों में काफी मिर्च मसाले के साथ पहले पन्ने पर प्रकाशित हो और उसके प्रकाशन के लिए 23 नवम्बर का दिन ही चुना जाए क्योंकि संसद के शीतकालीन सत्र में वह दिन मानव संसाधन मंत्रालय पर बहस के लिए पहले से निर्धारित था। इसलिए उस समाचार को ही मुख्य मुद्दा बनाकर आक्रोश का प्रदर्शन किया जा सकता था। संसद के हंगामें का प्रचार-माध्यमों पर छाना स्वाभाविक ही है।

शिक्षा के संघीकरण, भगवाकरण या तालिबानीकरण को लेकर 1998 में भाजपा-नीत राजग सरकार की स्थापना के क्षण से ही जो अभियान चलाया जा रहा है उसके सूत्रधार कुछ ऐसे इतिहासकारों को कहा जा सकता है, जिनमें से अधिकांश कम्युनिस्ट पार्टियों के कार्ड-होल्डर सदस्य रहे हैं। इनकी संख्या दस से अधिक नहीं है। आप जानना चाहेंगे इसलिए नाम ले देता हूँ—रामशरण शर्मा, रोमिला थापर, सतीशचंद्र, बिपिनचंद्र, इरफान हबीब, के०एन० पणिकर, सुमित सरकार, डी०एन० झा, के०एम० श्रीमाली और अर्जुन देव।

वैज्ञानिक लेखन की माँग होती है कि पाठ्यक्रम की समय-समय पर समीक्षा की जाए और अधुनातन शोध के आलोक में पाठ्य-पुस्तकों का पुनर्लेखन हो। कोई भी पाठ्य-पुस्तक सदा सर्वदा के लिए बनी नहीं रह सकती।

कोई भी विशेषज्ञ, जिसने कभी विश्वविद्यालय स्तर से नीचे न पढ़ाया हो, छठी कक्षा के बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकें लिखने का सर्वोत्तम अधिकारी हो सकता है? प्राचीन भरतीय इतिहास के किसी विशेषज्ञ को मध्यकालीन भारत का इतिहास लिखने की मजबूरी क्या हो सकती है? प्रो० रोमिला थापर प्राचीन भारतीय इतिहास की विशेषज्ञ मानी जाती हैं और उनका पूरा जीवन विश्वविद्यालयों में ही व्यतीत हुआ किन्तु उन्होंने कक्षा 7 के लिए 'मध्यकालीन भारत' पुस्तक लिख डाली।

इतिहास जानकारियों का ढेर है किन्तु यह सब जानकारी निचली कक्षाओं के बच्चों पर नहीं थोपी जा सकती। प्राथमिक, माध्यमिक व विश्वविद्यालय स्तर तक क्रमश: जानकारी का विस्तार करना होता है।

इतिहास लेखक का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय और सामाजिक एकता व सद्भाव को बढ़ाना होना चाहिए।

—देवेन्द्र स्वरूप

स्तालिनवादी इतिहासकारों द्वारा प्रचारित सफेद झूठ

लेखक : **सीताराम गोयल**

अनुवाद : **केशवप्रसाद कायाँ**

45.00

भारत की स्वतंत्रता के बाद से ही हमारे देश की शिक्षण एवं सांस्कृतिक संस्थाओं पर साम्यवादियों का वर्चस्व रहा है। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के समाजवादी आदर्शों तथा सोवियत रूस के प्रति सहानुभूति के फलस्वरूप साम्यवादी विचारधारा वाले तथाकथित बुद्धिजीवियों को देश की सर्वोच्च संस्थाओं पर हावी होने का सुअवसर प्राप्त हो गया। इन साहित्यकारों एवं इतिहासकारों ने देश के राजनीतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर विकृत करने में कोई कसर नहीं रखी। साम्यवादी इतिहासकारों के मन में श्रेष्ठता का अभिमान इस कदर भरा हुआ है कि वे अपने से भिन्न मत रखने वालों को बुद्धिजीवी मानने को ही तैयार नहीं हैं और तो और उनके द्वारा उठाए गए प्रश्नों का जवाब देना भी वे अपनी शान के खिलाफ समझते हैं।

कृष्ण जन्मभूमि, मथुरा के पुरातात्विक निष्कर्षों के विवाद पर उठाए गए प्रश्नों के जवाब को किस प्रकार वे टालते रहे हैं, यह पुस्तक इस तथ्य पर प्रकाश डालती है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

में निम्नलिखित पत्रिकाएँ

नियमित रूप से उपलब्ध हैं

1. आलोचना (त्रैमासिक)
2. बहुवचन (अर्द्धवार्षिक)
3. सहित (अद्धवार्षिक)
4. वागर्थ (मासिक)
5. वर्तमान साहित्य (मासिक)
6. पहल (त्रैमासिक)
7. कसौटी (त्रैमासिक)
8. परिचय (अद्धवार्षिक)
9. कथाक्रम (त्रैमासिक)
10. समकालीन भोजपुरी साहित्य (त्रैमासिक)
11. रंग प्रसंग (अर्द्धवार्षिक)
12. तद्भव (त्रैमासिक)
13. दीर्घा (अर्द्धवार्षिक)

पुस्तक समीक्षा

आस्था का पुनरुद्धार

यह एक सामान्य तथ्य है कि दुनिया की सबसे पुरानी किताब वेद है। यह कंठ से अक्षरों तक की यात्रा की साक्षी ध्वनियाँ हैं जिनमें संस्कृति और मानवीयता के दीर्घ रक्षित मूल्य समाहित हैं। वेद का एक अर्थ छंद भी होता है, इसलिए कई विद्वान वेद को सम्पूर्ण काव्य मानते हैं। वेद में निहित काव्य को आधुनिक भाषा-शिल्प में प्रस्तुत करने और उसके सौंदर्य को बार-बार मूल्यांकित करने का प्रयास होता रहा है। हिन्दी के वरिष्ठ कवि नरेश मेहता ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। बाद में कुछ अन्य लोगों ने भी इस दिशा में प्रयास किया। हाल ही में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ने 'वेद की कविता' शीर्षक एक और अनुरचना प्रकाशित की है जिसमें ऋग, यजुष और अथर्व वेदों के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्तों का काव्य पक्ष प्रस्तुत है। अनुरचनाकार हैं—प्रभुदयाल मिश्र। मिश्र जी ने इसके पूर्व उपनिषद पर आधारित 'मैत्रेयी' नामक एक उपन्यास भी लिखा है।

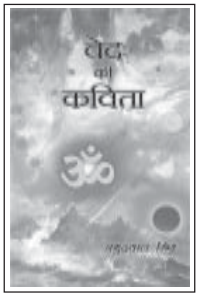

इसी किताब में अनुरचित कविताओं के कई क्रम हैं। इनमें संवाद, संबोधन, प्रार्थना, दर्शन, राष्ट्र, समाज, प्रकृति आदि के पक्ष शामिल हैं। सूर्य के लिए एक जगह आता है—

सूर्य धरता / विविध रंगी रूप
तेजोतप्त / ओढ़ लेती कृष्ण पट यह
रश्मिमाला किन्तु / रात आते ही

सूर्य का नित्य का उत्थान-स्खलन उस जीवनचर्या का ही हिस्सा है, जो प्रकृति ने नियत कर रखा है। सूर्य के गमन-आगमन और उनकी उपस्थिति का सम्पूर्ण सार हमारे सामने एक ऐसी प्राकृतिक अवस्था पैदा करता है, जिसके हम अभ्यस्त नहीं। हम तेज की गरिमा से इतने अभिभूत रहते हैं कि कृष्ण पट की अवस्थाओं को भुलाए रहते हैं, जबकि भुलाया जाना उचित नहीं। 'अग्नि' के लिए पंक्तियाँ आती हैं—

यज्ञ के रक्षक / प्रकाशित स्वयं ही
सत्य हो भास्वर / सनातन सारथी, हे अग्नि
ले चलो अब / निज गृह मागदर्शी

अग्नि की महिमा का बखान उसकी स्थायी तेजस्विता के चलते है। अग्नि का स्वयं प्रकाशित होना और भास्वर होना सूक्त रचयिता को यों ही आकर्षित नहीं करता बल्कि अग्नि के वे गुण जो उसकी ज्वलनशीलता की शक्ति में अंतर्निहित हैं, सभी प्रकार के अवगुणों का भी समापन कर देते हैं। इसीलिए उसे मार्गदर्शी बनाना जरूरी होता है। अग्नि से मिलने वाली उपलब्धियाँ थीं—सम्पदा, पोषण, सयुश, वरवीरता आदि। केवल अग्नि ही नहीं वायु, पृथ्वी सबके दाय के लिए कृतज्ञ आदि मनुष्य की भावना वेद की कविता में मौजूद है। 'विश्वेदेवा' में इस कृतज्ञता को इस रूप में देखा जा सकता है—

वायु / औषधि सुखद / लाए निकट
भूमि माता / पिता द्यौ / रस सोमस्तावी
प्रीतिकर पाषाण / दे औषधि / सुनो
भेषजकुमारों / बुद्धिवर / यह प्रार्थना

वायु पोषण, अस्तित्व अवस्थाओं की शक्ति और अन्य प्रमुख उपलब्धियों हेतु प्रार्थनाओं के कई स्वर सामने आते रहे हैं। ये प्रार्थनाएँ अपने उपचार या प्रकट आचार के निरंतन संचार के लिए की जाती रही हैं। इसलिए भी ज्ञात-अज्ञात सत्याभासों का नैरंतर्य बना रहे इस दिशा में भी प्रार्थनाएँ जाती रहती हैं। वेद की कविताएँ, ऐसी प्रार्थनाओं से भरी पड़ी हैं। 'विश्वेदेवा' शृंखला में भी ऐसी कई प्रार्थनाएँ हैं। एक जगह यह प्रसंग इस रूप में आता है—

देवताओं / कान से हम सुनें
शुभ्र / कल्याणकर / नेत्र से हम लखें
शुभ सुर पुज्य / अंग दृढ़ हों /
प्रार्थना रत रह / सदा जिससे / हम करें संपूर्ण
अपनी आयु के / शत वर्ष

मनुष्य की यह निजी कामना उसकी प्रार्थना का हिस्सा बनकर आदि कविता में उपस्थित होती है। यह कामना मधुर हो औषधि, मित्र शुभकर, शांत सुरपति आदि वाक्यों के रूप में भी पाठकों के सामने आती है। ये कविताएँ कर्त्ता, कर्म और अभिव्यक्त सृष्टि के आदि रूपों के प्रति विमर्श भी हैं और कृतज्ञ होने की मुद्राओं के साथ हमारे सामने प्रकट होती हैं। मानव जीवन की आरम्भिक तस्वीरों को संजोए ये कविताएँ हमारी आस्था का पुनरुद्धार करती हैं। काव्य विकास की सद्य: परिणतियों के सभी आरम्भिक रूपों के दर्शन हमें इस काव्य संग्रह में होते हैं। हम 'वेद की कविता' के बहाने अपनी पुरानी सांस्कृतिक भंगिमाओं का साक्षात्कार कर पाते हैं।

—प्रदीप तिवारी

वेद की कविता
अनुरचनाकार : प्रभुदयाल मिश्र
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
मूल्य : 120 रुपये

वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

वेद विश्व-संस्कृति के आधार-स्तम्भ हैं। आदिकाल से ही वेद मानवजाति के लिए प्रकाश-स्तम्भ रहे हैं। वेदों में ज्ञान और विज्ञान का अनन्त भण्डार विद्यमान है। आयुर्वेद जीवन का अंग है। आधि-व्याधि की चिकित्सा आयुर्वेद द्वारा ही सम्भव है। आयुर्वेदशास्त्र की दृष्टि से वेदों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि चारों वेदों में आयुर्वेद के विभिन्न अंगों और उपांगों का यथास्थान विशद वर्णन हुआ है।

वेदों में आयुर्वेद का उद्देश्य, वैद्य के गुण-कर्म, विविध औषधियों के लाभ आदि, शरीर के विभिन्न अंग, विविध चिकित्सा, हस्तस्पर्श-चिकित्सा, यज्ञ-चिकित्सा, विष-चिकित्सा, कृमिनाशन, दीर्घायुष्य, तेज, ओज, नीरोगता, वशीकरण, कुस्वप्न-नाशन, प्राकृतिक चिकित्सा, शल्य-चिकित्सा, पशु-चिकित्सा आदि पर विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। समस्त सामग्री का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संकलन और आकलन कर 12 अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। अन्त में 286 औषधियों के गुण-धर्म का पूर्ण विवरण दिया गया है।

वेदप्रेमियों और आयुर्वेद-जगत् के लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और संग्रहणीय ग्रन्थ है।

पेपरबैक : **150.00** सजिल्द : **200.00**

हिन्दी प्रकाशन जगत के भीष्म पितामह की जीवन-कथा

प्रकाशकनामा

हिन्दी प्रचारक संस्थान के संस्थापक कृष्णचन्द्र बेरी प्रकाशक मात्र नहीं हैं, वे एक सजग पत्रकार, लेखक, अनुवादक भी हैं। जीवन के 81 वर्ष व्यतीत कर चुके बेरीजी का जीवन कितना विविधतापूर्ण और रोमांचक रहा है 'प्रकाशकनामा' के प्रत्येक पृष्ठ इसके साक्षी हैं। 1920 में जन्मे बेरीजी ने राजनीति के संघर्षपूर्ण दिन देखे, निराला, पंत, प्रसाद, रामचन्द्र शुक्ल, शिवपूजन सहाय प्रभृति साहित्यकारों के उत्कर्ष को देखा। मुद्रण और प्रकाशन के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करते हुए उसके विकास और संघर्ष को देखा। प्रकाशकों को संघटित कर पुस्तकों के प्रचार-प्रसार की योजनाएँ बनाईं। 1947 में देश का विभाजन देखा जब कितने बन्धु पाकिस्तान से शरणार्थी बनकर आये।

बंगाल में अपने पिता श्री निहालचंद बेरी से पुस्तक व्यवसाय ग्रहण किया। बंगाल के वरिष्ठ साहित्यकारों रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रभृति के सम्पर्क में आये। बंग साहित्यकारों की संवेदनशीलता और पंजाबी प्रभाव दोनों का समन्वय आपके कार्य-व्यापार में हुआ।

'प्रकाशकनामा' हिन्दी प्रकाशकीय जीवन का कोश है। संघर्षमय संस्मरणों की खुली किताब है। प्रकाशक ही नहीं, जनसामान्य सभी के लिए पठनीय, उपन्यास की तरह रोचक। बीसवीं शताब्दी का राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चित्रण। प्रकाशन जगत को बेरीजी का यह ऐतिहासिक स्मारक अनुदान है।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रकाशकनामा
लेखक : कृष्णचन्द्र बेरी
प्रकाशक : हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा०लि०
पिशाचमोचन, वाराणसी
मूल्य : 300 रुपये

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित
तीन ग्रन्थों का लोकार्पण

महामहिम श्री विष्णुकान्त शास्त्री ने गत 30 दिसम्बर को राजघाट स्थित रविदास स्मारक भवन में आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय प्रकाशन से प्रकाशित **गङ्गा : पावन गङ्गा**—सं० शुकदेव सिंह, **हिन्दी सन्त काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन**—डॉ० वासुदेव सिंह तथा पुरुषोत्तमदास मोदी द्वारा सम्पादित प्रसादजी पर संस्मरणों का संकलन **अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'** का लोकार्पण करने के बाद पुस्तकों के लेखक और सम्पादकों को बधाई दी।

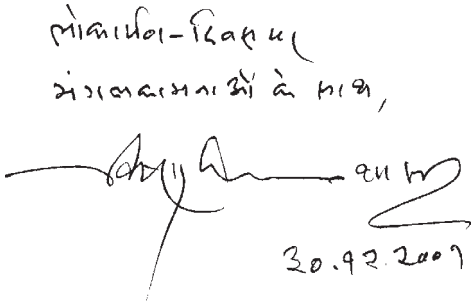

गङ्गा : पावन गङ्गा
सं० डॉ० शुकदेव सिंह

25.00

गङ्गा जलप्रवाह हैं, धारा है। हिमालय से समुद्र को जोड़नेवाला तरल-क्रम है। इसके साथ ही गङ्गा विचार है, संस्कृति है, मिथक है, हमारे प्रजातीय विश्वासों में अपनी सारी विशालता, पवित्रता के साथ जाति से स्त्री है। फिर भी सर्वाधिक पूज्य हैं। भारतीय विश्वासों में पूजा, अभिचार, विवाह, मंगल, दीपार्चन और महाश्मशान जैसी शतक्रित आस्थाओं में ब्रह्मलोक से शिवलोक तक, कमण्डल से जटा तक, सुरसरि देवनीत के रूप में प्रणम्य है। जलपूजा में वह जलदेवता वरुण से भी अधिक प्रणम्य है। प्रकृति-पूजा की अनेक परम्पराओं को अपने बीच रखते हुए गङ्गा सुन्दरी भी है। शान्तनु के हृदय का चंचल कामद्रव है। महाभारत के सबसे बड़े चरित्र-नायक पितामह परम व्रतधारी शस्त्र-शैय्या पर शरविद्ध होकर सूर्य के उत्तर की प्रतीक्षा करनेवाले भीष्म की माता है। प्रयत्न और तपस्या से जुड़े मिथकों की नायिका भागीरथी है। आयुर्वेद में वह सबसे बड़ी जलौषधि है। धर्म है। वह पाप-प्रक्षालन का सबसे बड़ा सामर्थ्य है। वह जहाँ अपनी धारा और दिशाएँ बदलती है, अपने उद्‌भव से लेकर समर्पण तक वह जगह-जगह तीर्थ है। वह अनेक ऋषियों से सम्बद्ध है। अत्रि के कारण गंगोत्री और पर्वत को समतल से जोड़ने के कारण हरिद्वार, यमुना और सरस्वती को अपनी ही धारा में मिला लेने के कारण तीर्थराज प्रयाग, शिवधाम, मणिकर्णिका के साथ पंचनद तीर्थों को एकत्र करनेवाली पंचगङ्गा और वरुणा तथा असी नदियों को अपने संगम में अवसर देनेवाली गङ्गा महातीर्थ वाराणसी है। पश्चिमवाहिनी होने के कारण मार्कण्डेय तीर्थ, उत्तरमुखी होने पर मदन वाराणसी, जमदग्नितीर्थ जमानियाँ, सभी संगमों का महासंगम गङ्गा-सागर अनेक-अनेक तीर्थों का गङ्गा, स्वयं जल है, स्नान है, मंत्रपीठ, तंत्र-पीठ और अनेक वनस्पतियों की जननी है। गङ्गा देवी और दैवी शक्तियों से सम्पन्न है।

हिन्दी सन्त काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० वासुदेव सिंह

380.00

हिन्दी संत काव्य मूलत: भारतीय चिन्तन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, सहस्त्रों वर्षों की आध्यात्मिक चिन्ता का प्रतिफलन है तथापि इसको व्यापक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय तत्कालीन सामाजिक अव्यवस्था है। वस्तुत: सामाजिक दृष्टि से यह न्याय और समानता का आंदोलन है। वर्णाश्रम-व्यवस्था में पिसती, ऊँच-नीच की भेद-भावना में कराहती तथा-कथित अस्पृश्य समझी जानेवाली जाति का आन्दोलन है, जो वर्ग-वैषम्य के अन्यायपूर्ण जुए को उतार फेंकने के लिए व्याकुल हो रही थी।

संत-काव्य मूलत: लोकजीवन का काव्य है, जिसमें समाज के दलित-उपेक्षित-शोषित वर्ग की पीड़ा और उसकी इच्छा-आकांक्षाओं को मुखरित किया गया है; धर्म के नाम पर समाज में व्याप्त कुरीतियों, बाह्याचारों और पाखण्डों पर तीखा प्रहार किया गया है, मनुष्य-मनुष्य में भेद उत्पन्न करनेवाली मिथ्या चहारदीवारी को भग्न किया गया है, मुल्ला-पुरोहितों के प्रभुत्व की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं, समता, बन्धुत्व-भावना और मानवतावाद का शंखनाद किया गया है, नागर-संस्कृति की अपेक्षा बहुसंख्यक ग्राम-समाज को प्रमुखता दी गई है तथा राजनीतिक पराभव और सामाजिक वैषम्य से हताश लोक-जीवन में नूतन स्फूर्ति और आशा का संचार किया गया है।

इन संतों ने ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वव्यापकता का उद्‌घोष करते हुए परम सत्य को निर्द्वन्द्व-निर्भीक वाणी में अभिव्यक्त किया तथा मिथ्या धारणाओं का कठोर शब्दावली में खण्डन किया। इस प्रकार इन्होंने मानव-समाज के सामूहिक कल्याण की चर्चा की और धर्म-निरपेक्ष सामाजिक व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया। इसीलिए वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में संत-काव्य के वैचारिक मूल्यों की विशेष सार्थकता तथा आवश्यकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत ग्रंथ लिखा गया है। विश्वास है, प्रस्तुत कृति समाज को नई दिशा, गति एवं ऊर्जा प्रदान करने में सफल होगी।

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० पुरुषोत्तमदास मोदी

150.00

जयशंकर 'प्रसाद' छायावाद युग के महान कवि थे। वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने नाटकों, निबन्धों, कहानियों और कविताओं के माध्यम से भारतीय-संस्कृति को उजागर किया है और हिन्दी-साहित्य भण्डार को परिपुष्ट किया है। वे मौन साहित्य सेवी थे। दुनिया के कोलाहल से दूर रहकर साहित्य सर्जना की। वे किसी भी समारोह-सम्मेलनों से दूर रहते थे। इस कारण उनके व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश नहीं पड़ता। यह सौभाग्य की बात है कि उनके समकालीन साहित्यकारों में पण्डित सीताराम चतुर्वेदी, प्रसादजी के अंतरंग मित्र डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा और मैत्रेयी सिंह प्रभृति के पास उनके अनेक संस्मरण हैं, जिनका संकलन इस ग्रन्थ में किया गया है।

इस ग्रन्थ में प्रसादजी के जीवन पर प्रकाश डालने वाले संस्मरणों का संकलन किया गया है। जिससे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़े। प्रसादजी के जीवन के प्राय: विभिन्न पक्षों पर उनके समकालिक मित्र रायकृष्णदास, विनोदशंकर व्यास, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामनाथ सुमन, केशवप्रसाद मिश्र, महादेवी वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', अमृतलाल नागर प्रभृति के दुर्लभ संस्मरण से नयी जानकारी मिलती है। इस संकलन में ऐसे भी संस्मरण हैं जिनसे अनछुये पक्षों पर प्रकाश पड़ता है।

इस छोटी सी पुस्तक में संकलित रचनाओं से प्रसादजी के जीवन पर समग्र रूप से नयी जानकारी प्राप्त होती है। सम्पादक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी ने इन संस्मरणों का संकलन-सम्पादन कर प्रसाद साहित्य को समझने में नयी दिशा दी है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 2001 के प्रमुख ग्रन्थ

साहित्य समीक्षा

तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 320

हिन्दी सन्त काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० वासुदेव सिंह* 380

हिन्दी काव्य में हनुमत-चरित्र *डॉ० मीनाकुमारी गुप्ता* 400

सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत *डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय* 250

वाक्सिद्धि *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 160

हिन्दी-साहित्य : विविध परिदृश्य *डॉ० सदानन्दप्रसाद गुप्त* 160

नियति साहित्यकार की *डॉ० सुधाकर उपाध्याय* 80

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य-संसार *डॉ० मंजु त्रिपाठी* 100

भारतेन्दु के नाट्य शब्द *डॉ० पूर्णिमा सत्यदेव* 100

उपन्यास

पांचाली : नाथवती-अनाथवत् *बच्चन सिंह* 125

तरुण संन्यासी *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120

लोकऋण *विवेकी राय* 80

बबूल *विवेकी राय* 40

ननकी *पत्रकार बच्चन सिंह* 60

संस्मरण

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150

भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया, डॉ० भावना मिश्र* 125

काव्य-संग्रह

वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र* 120

अन्तर के आंगन से *डॉ० हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'* 200

एक शब्द उठाता हूँ *अनन्त मिश्र* 180

नाटक

मांदर बज उठा *अनिन्दिता* 150

संगीत-साहित्य

राग जिज्ञासा *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 300

संस्कृत-साहित्य

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास *डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी* 350

रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 150

अध्यात्म

जपसूत्रम : प्रथम खण्ड *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 150

भारतीय धर्म साधना *म०म० पं० गोपीनाथ कविराज* 80

क्रम साधना *म०म० पं० गोपीनाथ कविराज* 60

वर्ष 2002 में प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

1. **बोलने की कला** *डॉ० भानुशंकर मेहता* (वाक्विज्ञान पर आधारित वक्ता, अभिनेता, अध्यापक तथा छात्रों के लिए)
2. **बदमाश दर्पण - तेग अली** *सं० श्रीनारायणदास*
3. **भोजपुरी लोकसाहित्य** *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय*
4. **भारतीय संग्रहालय एवं जनसंपर्क** *आर० गणेशन*
5. **चरित्रहीन** (उपन्यास) *आबिद सुरती*
6. **देवभूमि उत्तराखण्ड** *डॉ० गिरिराज शाह*
7. **आर्य समाज संस्थापक : स्वामी दयानंद** *श्री भवानीलाल भारतीय*
8. **हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य** *युगेश्वर*
9. **काशी का इतिहास** (नवीन संस्करण) *डॉ० मोतीचन्द्र*
10. **महाभारत का काल निर्णय** *डॉ० मोहन गुप्त*
11. **पुरइन पात** (भोजपुरी साहित्य चयन) *सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन'*
12. **प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक** *डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव*
13. **The Rise & Growth of Hindi Journalism** *Dr. R.P. Bhatnagar & Dr. D.N. Singh*
14. **सृष्टि और उसका प्रयोजन** *मेहेर बाबा* *प्रस्तुतकर्ता : शिवेन्द्र सहाय*
15. **सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म**
16. **अक्षर बीज की हरियाली** *डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ*
17. **आध्यात्मिक काशी** *संपादित*
18. **प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ** *डॉ० किशोरीलाल गुप्त*
19. **संस्कार स्मृति** *भरत झुनझुनवाला*
20. **व्यावहारिक पत्रकारिता** *पत्रकार बच्चन सिंह*
21. **काशी के हास्य व्यंगकार** *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह*
22. **हजामत की मैच** *अशोक जी*
23. **हिन्दी का गद्य साहित्य** *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* (नवीन परिवर्धित संस्करण)
24. **मेरे पापा की शादी** (उपन्यास) *आबिद सुरती*
25. **पूर्वांचल के संत-महात्मा** *परागकुमार मोदी*
26. **मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ** *डॉ० रामकली सर्राफ*
27. **समाजदर्शन की भूमिका** (नवीन संशोधित परिवर्धित संस्करण) *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव*

पद्मभूषण विद्यानिवास मिश्र की कृतियाँ

अंगद की नियति 25

नैरन्तर्य और चुनौती 60

बसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं 15

छितवन की छाँह 18

आँगन का पंछी और बनजारा मन 75

अग्निरथ 35

उत्तर गीत गोविन्द 60

नदी नारी और संस्कृति 80

व्यक्ति-व्यंजना 220

मेरे राम का मुकुट भींग रहा है 18

भावपुरुष श्रीकृष्ण 30

बूँद मिले सागर में 40

तमाल के झरोखे से 35

रीति विज्ञान 175

हिन्दी और हम 125

तुम चन्दन हम पानी 125

देश धर्म और साहित्य 150

भ्रमरानन्द के पत्र 30

भारतीयता की पहचान 100

संचारिणी 75

कौन तू फुलवा बीननि हारी 30

रहीम ग्रन्थावली 125

तन्त्र, कला और आस्वाद 100

गाँव का मन 95

स्वरूप-विमर्श 125

लोक और लोक का स्वर 125

रामायण का काव्यमर्म 225

हिन्दी साहित्य का पुनरालोकन 125

गति और रेखा 9.50

हिन्दू धर्म जीवन में सनातन की खोज 225

फागुन दुइ रे दिना 100

महाभारत का काव्यार्थ 120

भारतीय चिन्तन धारा 100

शैफाली झर रही है 90

सोहम 75

साहित्य का खुला आकाश 125

पानी की पुकार 25

वाचिका कविता : भोजपुरी 80

देव की दीप शिखा 50

नयी कविता की मुक्तधारा 55

द्विजदेव ग्रन्थावली 200

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सम्मति

अंतरंग संस्मरणों में 'प्रसाद' बहुत बड़ा काम किया है, बहुत-बहुत साधुवाद। प्रसादजी के वास्तविक जीवन के विषय में इसमें प्रभूत सामग्री है। किन्तु एक बात छूट गई—सुँघनी के बादशाह प्रसादजी। यह बहुत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण उनके जीवन का अध्याय है। जब उनके पिताजी के देहान्त के पश्चात् घर की व्यवस्था बिगड़ गई थी, तब उन्होंने कैसे अपने घरेलू व्यापार को सँभाला, यह भी उनके पुरुषार्थ का एक पक्ष है। दूसरी बात उनके नाटकों के मंचन के विषय में किस-किस प्रकार कुछ लोगों ने उन पर कीचड़ उछाला कि उन्हें नाटक लिखना नहीं आता, फिर किस प्रकार काशी में उनको चुनौती देकर उनके नाटक खेले गये और कैसे उन्होंने सहयोग किया।

25.12.2001 **—पं० सीताराम चतुर्वेदी**
मुजफ्फरनगर (95 वर्षीय, पं० सीताराम चतुर्वेदी प्रसादजी के चन्द्रगुप्त नाटक के एक अभिनेता)

मंच नाटकों के लिए बनाये जाते हैं। नाटक मंच के लिए नहीं लिखे जाते।
—जयशंकर प्रसाद

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आध्यात्मिक तथा अन्य ग्रन्थ

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)		300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि		100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2)		80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)		50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना	*रमेशचन्द्र अवस्थी*	50
परातंत्र साधना पथ		40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा		250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग (कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)		20
भारतीय धर्म साधना	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन		15
ज्ञानगंज		60
कविराज प्रतिभा		64
दीक्षा		60
श्री साधना		50
स्वसंवेदन		50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ		80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त		120
श्रीकृष्ण प्रसंग		250
काशी की सारस्वत साधना		35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी		100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1)		200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2)		120
सनातन-साधना की गुप्तधारा		100
अखण्ड महायोग		50
क्रम साधना		60
भारतीय साधना की धारा		30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड)		150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान		20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नंदलाल गुप्त*	160
English Edition	*In Press*	
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी	*सत्यचरण लाहिड़ी*	120
नीम करौरी के बाबा	*डॉ. बदरीनाथ कपूर*	12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति)	*हरिश्चन्द्र मिश्र*	50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shhyama Charan Lahiree	*Dr. Ashok Kr. Chatterjee*	400

तंत्रसिद्ध पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी

पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी (जीवनी)		120
धर्म और उसका अभिप्राय		80
प्राणमयं जगत	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद		100
आत्मबोध	*श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल*	30
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में)	,,	375
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड)	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	25
आश्रम चतुष्टय	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	25
मोक्ष साधन या योगाभ्यास	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	15
दिनचर्या	*श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल*	20
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति	,,	20
Purana Purusha Yogiraj Shri Shyama Charan Lahiree (*Biography*)		400
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी	*शिवनारायण लाल*	150

पं० अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

मारणपात्र		250
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी		180
वह रहस्यमय कापालिक मठ		180
मृतात्माओं से सम्पर्क		200
परलोक विज्ञान		300
कुण्डलिनी शक्ति		250
तीसरा नेत्र (भाग-1)		250
तीसरा नेत्र (भाग-2)		300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य (भाग-1)		35

अन्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रन्थ

धर्म क्षेत्रे कर्म क्षेत्रे : श्रीमद्भगवद्गीता	*स्यमन्तक मणि मिश्र*	94
सब कुछ और कुछ नहीं	*मेहेर बाबा*	60
जपसूत्रम (प्रथम तथा द्वितीय खण्ड)	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* (प्रत्येक)	150
सोमतत्व	*सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा*	100
वेद व विज्ञान	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	80
अनन्त की ओर (एक साधक की आध्यात्मिक अनुभूतियाँ)	*अशोककुमार*	90
हिन्दी सन्त साहित्य का केन्द्र बिन्दु	*डॉ. सन्तनारायण उपाध्याय*	180
सन्तमत : साधना और सिद्धांत	*डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी*	250
दर्शन, धर्म तथा समाज	*राजाराम शास्त्री*	320
नाथ और संत साहित्य	*डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय*	250
राम भक्ति साहित्य : अन्वेषक और राही	*डॉ. उदयप्रताप सिंह*	300

आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण (समाजसेवी, राष्ट्रनेता, क्रान्तिकारी)

महात्मा गाँधी	*रोमां रोलाँ*	120
आत्मकथा	*महात्मा गाँधी*	40
राजा राममोहन राय	*के.सी. दत्त*	150
मेरी कहानी	*जवाहरलाल नेहरू*	100
आत्मकथा	*राजेन्द्रप्रसाद*	133
आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व	*मुकुट बिहारी लाल*	60
सरदार माने सरदार	*डॉ. गुणवंत शाह*	25
भारतभूषण महामना पं० मदनमोहन मालवीय	*उमेशदत्त तिवारी*	100
लोहिया स्मरण	*सं. ओंकार शरद*	90
मेरा जीवन संग्राम	*एडल्फ हिटलर*	100
समाजवाद : संकल्प और संघर्ष- प्रभुनारायण सिंह : बहुआयामी व्यक्तित्व	(अभिनन्दन ग्रन्थ)	800
मेरा संघर्ष	*हिटलर*	250
कवि राजनेता अटलबिहारी वाजपेयी	*चन्द्रिकाप्रसाद शर्मा*	195
ज्योति बसु	*सुरभि बनर्जी*	150
जब मैं राष्ट्रपति था	*आर. वेंकटरामन*	300
मोर पंख	*ठाकुरप्रसाद सिंह*	150
हिम्मत है (किरन बेदी : एक जीवन)	*परमेश डगवाल*	200
आवारा मसीहा (शरत)	*विष्णु प्रभाकर*	175
जो छोड़ गये : वे भी रहेंगे	*शंकरदयाल सिंह*	40
मेरा बचपन : मेरा कलकत्ता	*रामेश्वर टाँटिया*	50
वे दिन वे लोग	*डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त*	60
बढ़ते कदम-बदलते आयाम	,,	250
चित्र और चरित्र	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
मुझे विश्वास है	*विमल मित्र*	50
मेरे पुलिस सेवा के वे दिन	*विश्वनाथ लाहिड़ी*	80
हारी हुई लड़ाई का वारिस (स्व. ठाकुरप्रसाद सिंह)	*उमेशप्रसाद सिंह*	100
आलोक पथिक स्वामी स्वतंत्रतानन्द	*डॉ. कन्हैया सिंह*	50
अन्तर्गाथा	*पी.वी. नरसिंह राव*	450
क्या भूलूँ क्या याद करूँ	*हरिवंश राय बच्चन*	150
नीड़ का निर्माण फिर	*हरिवंश राय बच्चन*	175
बसेरे से दूर	*हरिवंश राय बच्चन*	125
दशद्वार से सोपान तक	*हरिवंश राय बच्चन*	250
अग्नि की उड़ान	*पी.जे. अब्दुल कलाम*	200
मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज की जीवनी)	*पं. गोपीनाथ कविराज*	300
मेरे बचपन के दिन (आत्मकथा)	*तसलीमा नसरीन*	200

चिंतक, संत, योगी, महात्मा

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ. गिरिराज शाह*	100
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*	60
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	*डॉ. अर्जुन तिवारी*	50
भारत के महान योगी भाग 1-2 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100

भारत के महान योगी

भाग 3-4 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 5-6 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 7-8	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 9-10	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भारत की महान साधिकाएँ	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
महाराष्ट्र के संत महात्मा	*ना.वि. सप्रे*	120
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य	*डॉ. रामचन्द्र तिवारी*	100
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य	*डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह*	60
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नंदलाल गुप्त*	160
आदि शंकराचार्य	*डॉ. जयराम मिश्र*	80
एकता के दूत शंकराचार्य	*डॉ. दशरथ ओझा*	125
गुरुनानक देव : जीवन और दर्शन	*डॉ. जयराम मिश्र*	125
स्वामी रामतीर्थ : जीवन और दर्शन	*''*	200
चैतन्य महाप्रभु	*अमृतलाल नागर*	90
भगवान बुद्ध	*धर्मानन्द कोसाम्बी*	160
करुणामूर्ति बुद्ध	*गुणवंत शाह*	25
महामानव महावीर	*गुणवंत शाह*	30
मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन	*डॉ. रघुवंश*	160

रामायण-रामचरितमानस

तुलसीदास कृत रामायण	*ज्वालाप्रसाद मिश्र*	400
रामचरितमानस (तीन खण्ड)	*विनायक राव*	2250
श्रीरामचरितमानस टीका	*योगेन्द्रप्रसाद*	600
रंगनाथ रामायण	*तेलगु हिन्दी अनुवाद*	250
कृतिवास रामायण (3 खण्ड)	*बंग्ला-हिन्दी*	500
कम्ब रामायण (5 खण्ड)	*तमिल-हिन्दी*	1120
श्रीराम विजय-पं. श्रीधर कृत	*मराठी-हिन्दी*	250
भानुभक्त रामायण	*नेपाली-हिन्दी*	100
गिरधर रामायण	*गुजराती-हिन्दी*	250
विचित्र रामायण	*उड़िया-हिन्दी*	250
चन्द्रा रामायण	*मैथिली-हिन्दी*	250
अद्भुत रामायण	*संस्कृत-हिन्दी*	100
रामगाथा (4 खण्डों में)	*डॉ. ओम जोशी*	2000
रामायण का काव्यमर्म	*विद्यानिवास मिश्र*	225
मानस और ज्योतिष (तुलसी साहित्य में ज्योतिर्विज्ञान के तत्त्व)	*वी.बी. सिंह*	200
तुलसी के हिय हेरि	*श्री विष्णुकान्त शास्त्री*	175
श्रीरामचरितमानस (जटाशंकरी टीका)	*आ.पं. जटाशंकर दीक्षित*	400
वाल्मीकि रामायण (4 खण्ड)	*संस्कृत-हिन्दी*	820
कौशिक रामायण	*कन्नड़ का हिन्दी अनुवाद*	150
कृतिवास रामायण	*बंगला का हिन्दी अनुवाद*	350
बिलंका रामायण		150
विचित्र रामायण		150

महाभारत के पात्र

कृष्ण की आत्मकथा (8 भाग)	*मनु शर्मा*	2400
मृत्युंजय	*शिवाजी सावन्त*	280
द्रोण की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	300
पार्थ	*युगेश्वर*	225
कृष्णा	*युगेश्वर*	200
कर्ण की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	350
कृष्ण और मानव संबंध	*हरीन्द्र दवे*	200
कृष्ण का जीवन संगीत	*गुणवंत शाह*	300
पांचाली (नाथवती-अनाथवत)	*बच्चन सिंह*	125
माधव कहीं नहीं हैं	*हरीन्द्र दवे*	105
गांधारी की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	350
वैजयंती (2 भागों में)	*चित्रा चतुर्वेदी* (सेट)	500

श्रीमद्भगवद्गीता

गीता रहस्य	*लोकमान्य तिलक*	300
Gita Rahasya	*Tilak*	325
Bhagvad Gita	*Advaita Ashram*	160
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*संत ज्ञानेश्वर, अनु. ना.वि. सप्रे*	180
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्ड)	*श्यामाचरण लाहिड़ी*	375
गीता प्रवचन	*विनोबा भावे*	20
गीता प्रबन्ध	*श्री अरविन्द*	150
गीता-तत्त्व-बोध (खण्ड 1-2)	*बालकोबा भावे*	300
भगवद्गीता	*डॉ. राधाकृष्णन्*	
कृष्ण का जीवन संगीत	*गुणवंत शाह*	300
कृष्ण और मानव सम्बन्ध	*हरीन्द्र दवे*	80
श्रीमद्भगवद्गीता	*शांकरभाष्य, नीलकण्ठी*	400
श्रीमद्भगवद्गीता (2 भाग)	*मधुसूदन टीका, हिन्दी व्याख्या*	1250
यथार्थगीता	*स्वामी अड़गड़ानन्द*	150
Yatharth Gita	*Swami Argranand*	150
भारत सावित्री (3 भाग)	*वासुदेवशरण अग्रवाल*	80

भगवद् कथा एवं चरित

रामकथा	*फादर कामिल बुल्के*	225
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम	*डॉ. जयराम मिश्र*	100
रामकथा नवनीत	*पांडुरंग राव*	240
महाभारत कथा	*अमृतलाल नागर*	125
लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण	*डॉ. जयराम मिश्र*	90
श्रीमद्भागवत रहस्य	*डोंगरेजी महाराज*	200
तत्त्वार्थ रामायण	*डोंगरेजी महाराज*	200

जनवरी 2002 में प्रकाशित पुस्तकें

लेख-संग्रह

आदि, अन्त और आरम्भ	*निर्मल वर्मा*	195
आदमी की निगाह में औरत	*राजेन्द्र यादव*	200
अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य	*सं०-राजेन्द्र यादव : अर्चना वर्मा*	250

कहानी

नंगा	*संजय*	150
हमा दियो परदेस	*मृणाल पाण्डे*	150
जहाँ लक्ष्मी कैद है	*राजेन्द्र यादव*	195
तीन निगाहों की एक तस्वीर	*मन्नू भण्डारी* (पेपरबैक) 40, (सजिल्द)	125
एक प्लेट सैलाब	*मन्नू भण्डारी*	125
मैं हार गई	*मन्नू भण्डारी*	125

साहित्य-समीक्षा

हिन्दी एकांकी	*सिद्धनाथ कुमार*	295
तुलसी-काव्य-मीमांसा	*उदयभानु सिंह*	475
कबीर-काव्य में कालबोध	*डॉ० सुमीता कुकरेती*	350
दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र	*ओमप्रकाश वाल्मीकि*	175
आलोचना के सिद्धान्त	*शिवदान सिंह चौहान*	250

कविता

किसी रंग की छाया	*सुन्दरचन्द ठाकुर*	125

उपन्यास

रामनगरी	*राम नगरकर*	50
न हन्यते	*मैत्रेयी देवी*	75
इच्छामृत्यु	*शिवशंकरी*	125
कादम्बरी	*बाणभट्ट*	195
तबादला	*विभूतिनारायण राय*	150

आत्मकथा, यात्रा, संस्मरण

ततः किम्	*मीराकांत*	125
ख़लीफों की बस्ती	*शिवकुमार श्रीवास्तव*	295
डेराडंगर	*दादासाहब मोरे*	225
भूले-बिसरे दिन	*अरुण खोरे*	125

रामचन्द्र शुक्ल तथा रविन्द्रनाथ टैगोर की कृतियाँ कापीराइट से मुक्त

1 जनवरी 2002 से रामचन्द्र शुक्ल की सभी कृतियाँ तथा रविन्द्रनाथ टैगोर की सभी रचनाएँ (चित्र-संगीत, काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि) कापीराइट से मुक्त हो गई हैं, अब उनका प्रकाशन, प्रसारण मुक्त रूप से किया जा सकेगा। यह उल्लेखनीय है कि कापीराइट की अवधि लेखक अथवा रचनाकार की मृत्यु तिथि से 50 वर्ष थी।

रविन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं के प्रकाशक विश्वभारती शांति निकेतन के अनुरोध पर इसकी अवधि 10 वर्ष और बढ़ा दी गई। इस बार पुन: विश्वभारती ने कापीराइट की अवधि बढ़ाने का अनुरोध किया, जिसे भारत सरकार ने स्वीकार नहीं किया।

अब रामचन्द्र शुक्ल की रचनाएँ विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रतियोगी मूल्य पर प्रकाशित की जा रही हैं। रवि बाबू की रचनाओं का प्रकाशन भी कम मूल्य पर प्रकाशित करने की होड़ लग गई है।

प्रेमचंद तथा जयशंकर प्रसाद की रचनाओं का कापीराइट 104 वर्ष उपरान्त समाप्त हो गया था। आज इनकी रचनाएँ विभिन्न रूपों में अनेक प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं।

भारत सरकार को पुन: कापीराइट की अवधि पचास वर्ष कर देनी चाहिए। इससे पुराने लेखकों की विलुप्त हो रही अनेक कृतियाँ प्रकाश में आ जायँगी।

इस मास की नई पुस्तकें

शायरी

आज के प्रसिद्ध शायर	*सं० कन्हैयालाल नन्दन*	000
अहमद फ़राज़	,,	150
बशीर बद्र	,,	150
अमीर कज़लबाश	,,	150
निदा फ़ाजली	,,	150

पत्र

तुम्हारा कमलेश्वर	*कमलेश्वर*	125

कहानी

समग्र कहानियाँ	*कमलेश्वर*	400
इक्यावन हास्य बाल कहानियाँ	*सं० रमाशंकर*	250
जंगल बोलते हैं	*विनायक*	100
मुट्ठी में बंद खुशबू	*निर्मला सिंह*	100
कस्बे का मन	*अमरेन्द्र कुमार*	100
अँधेरे में कहीं	*अमिताभ स०*	200
बड़े शहर के ताबूत	*योगेश गुप्त*	375
धूप उदास है	*सरला अग्रवाल*	150
मंजिल दूर नहीं है	*अनीता कथूरिया*	150
कर्फ्यू	*सं० राबिन शा पुष्प*	200
श्रेष्ठ पौराणिक कहानियाँ	*राधावल्लभ त्रिपाठी*	200
जगार	*विपुल ज्वाला प्रसाद*	90
चर्चित कहानियाँ	*सरला अग्रवाल*	160

कविता

पगडंडियाँ	*मनोज श्रीवास्तव*	125
लौटकर देखना	*विवेकी राय*	100
मैं ही तो हूँ ये	*अलका सिन्हा*	115
बन्द दरवाजे पर दस्तक	*अनीता कथूरिया*	125
लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएँ	*अशोक अंजुम*	150
अंतर के आँगन से	*हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'*	200
हम अलख के स्वर अकिंचन	*अनिल मिश्र*	90
वेद की कविता	*प्रभुदयाल मिश्र*	120

उपन्यास

काला पादरी	*तेजिन्दर*	150
कलकत्ता से दिल्ली तक	*रमेश बक्षी*	200
मनु ग्रह की सैर	*अनवीक्षा मैत्रेय*	90
राजकन्या	*आशापूर्णा देवी*	200
डॉक्टर बैनर्जी	*विमल मित्र*	125
नाव दुर्घटना	*रवीन्द्रनाथ ठाकुर*	150
अमृत कुम्भ की खोज में	*समरेश बसु*	200
इकाई दहाई सैकड़ा	*विमल मित्र*	400
अनोखा प्रेम	*आशापूर्णा देवी*	175
आखिरी पन्ने पर देखिए	*विमल मित्र*	150
ननकी	*बच्चन सिंह, पत्रकार*	60
बबूल	*विवेकी राय*	40
मुक्ति की पुकार	*परमात्मा राय शर्मा*	300

पत्रकारिता

समाचार और संवाददाता	*डॉ० निशान्त सिंह*	125
आधुनिक रिपोर्टिंग	*डॉ० राजेन्द्र राही*	160
मीडिया : समग्र आयाम	*विजया पाठक*	125

साहित्य समीक्षा

मुक्तिबोध की काव्य भाषा	*डॉ० सनतकुमार*	220
तुलसी काव्य की भूमिका	*युगेश्वर*	225
तुलसीदास के ग्यारह ग्रन्थ : भाग-1	*युगेश्वर*	475
तुलसीदास के ग्यारह ग्रन्थ : भाग-2	*युगेश्वर*	375
रसाभिव्यक्ति	*डॉ० दशरथ द्विवेदी*	150
आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	*डॉ० मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला*	300

नाटक

सवाल और स्वप्न	*कृष्णबलदेव वेद*	80
मांदर बज उठा	*अनिन्दिता*	150

अध्यात्म

जपसूत्रम भाग 1-2	*स्वामी प्रत्यगात्मानन्द* (प्रत्येक)	150
कथा त्रिदेव की	*रामनगीना सिंह*	25
गङ्गा : पावन गङ्गा	*डॉ० शुकदेव सिंह*	25
वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र	*डॉ. कपिलदेव द्विवेदी*	200

संस्मरण

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'	*सं० पुरुषोत्तमदास मोदी*	150
एक नाव के यात्री	*विश्वनाथप्रसाद तिवारी*	160

पालि के प्रमुख पाठ्य ग्रन्थ

धम्मपद - अट्ठकथा, भाग 1 (हिन्दी अनुवाद सहित)	*डॉ० सुरेन्द्र कुमार*	100
बुद्धवंश (मूल पालि तथा हिन्दी अनुवाद सहित)	,,	60
मधुरत्थप्पकासिनी (मिलिन्द पञ्ह की टीका)	,,	50

संस्कृति

भारतीय संस्कृति कथा कोश (भाग 1-2) *अमरनाथ शुक्ल*

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **जनवरी 2002** **अंक : 1**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत **रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002**
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in